10

दरवाज़े से आगे जाना

परमेश्वर के पास हमें जश्न के साथ जाना चाहिए या गम्भीरता से? क्या इन दोनों में से एक या दोनों व्यवहार सही हो सकते हैं, यह इस पर निर्भर करता है कि किसी विशेष आराधना सभा के लिए या किसी विशेष भाग के लिए कौन-सा उपयुक्त है। कोई भी उपयुक्त मूड या मुद्रा चुनी जा सकती है, शर्त यह है कि यह परमेश्वर की महिमा और भक्ति से भरी हो। कोई भी शारीरिक क्रिया अपने आप में आराधना नहीं है। आराधना हृदय का काम है। आराधना में कार्य परमेश्वर के प्रति सच्ची निष्ठा की अभिव्यक्ति होना चाहिए। हम जो भी करते हैं वह आराधना की इच्छा से होना चाहिए। चाहे जो भी करें, यदि आराधना की इच्छा नहीं होती तो वह आराधना नहीं है। तन तो सही जगह हो सकता है, जो सब काम सही कर रहा है, पर यदि मन वहां नहीं है, तो आराधना नहीं हो रही है।

ऐसे व्यक्ति के बारे में जो आराधना के लिए आया पर सभा क्षेत्र के प्रवेश द्वार पर रुककर पूरी आराधना के दौरान वहीं रहा, आप क्या सोचेंगे? कई बार हम मन और हृदय में ऐसा करते हैं? हमारे तन तो सभा में होते हैं पर मन कहीं और होते हैं। हम शब्दों द्वारा दिए जाने वाले संदेश की ओर ध्यान दिए बिना, अपने मनों को प्रार्थना के दौरान इधर-उधर भटकने देकर, आराधना के खत्म होने पर किए जाने वाले कामों की ओर ध्यान लगाते हुए बाहरी तौर पर ही कार्य करते और गीत गाते हैं। यदि कोई इस प्रकार से आराधना में जाता है तो उसका दिल दरवाज़े से आगे नहीं जा रहा है।

दूसरे चरम पर वे लोग हैं, जो आनन्द से सभा में जाते हैं क्योंकि उन्हें अच्छा लगता है। वे दूसरों से पहले आ जाते हैं और उन्हें जाने की कोई जल्दी नहीं होती। वे टाइम पास के लिए आते हैं और उनका टाइम भी अच्छा पास हो जाता है। उन्हें लोगों के साथ मिलना, किसी के घर जाना और दूसरों के जीवनों में तांक-झांक करना अच्छा लगता है। कइयों को विशेषकर सुर से सुर मिलाकर गाना अच्छा लगता है, जिसमें गाने के उनके भाग पर अधिक ज़ोर दिया गया हो। वे उन शब्दों में मिलने वाले संदेश की ओर कम ध्यान देंगे पर उन्हें उसका संगीत अच्छा लगता है। इन आराधकों का हृदय भी द्वार में ही रहता है या कम से कम परमेश्वर के सामने कभी नहीं जाता।

आराधना करने की इच्छा करके

यदि हम किसी आराधना सेवा में केवल इसलिए भाग लेते हैं कि वह हमें अच्छी लगती है, तो हमारा उद्देश्य संदेहपूर्ण है। मैं आराधना में अच्छा समय होने के विरुद्ध नहीं हूं। परमेश्वर ने आराधना को आराधक के लिए आनन्दमय तथा उपयोगी बनाने के लिए ही बनाया। परन्तु मन बहलाने के *उद्देश्य* से सभा में आने वाला व्यक्ति आराधना को गलत समझ सकता है। परमेश्वर की आराधना के *उद्देश्य* से सभा में आने वाले व्यक्ति का भी समय अच्छा बीतेगा, पर वह आराधना के सही अर्थ से चूकेगा नहीं। लोगों से, विशेषकर समान विश्वास वाले लोगों से मिलने की इच्छा

करना गलत नहीं है; परन्तु आराधना में परमेश्वर को उसके साथ होने की हमारी इच्छा अच्छी लगती है। आराधना अचानक से नहीं हो जाती। सामूहिक आराधना तभी होती है जब कोई समूह परमेश्वर की आराधना के *स्पष्ट उद्देश्य* से इकट्ठा हो। एक ही *उद्देश्य* वाले लोगों के साथ आराधना करने से हमें परमेश्वर की उपस्थिति में आने में सहायता मिलती है। हर आराधक को परमेश्वर के पास आने और दूसरों को उसके निकट लाने की विवेकपूर्ण इच्छा से सभा में आना चाहिए।

बहुत साल पहले मैंने एक बहुत बड़ी मण्डली में अपने कुछ रिश्तेदारों के साथ आराधना में भाग लिया था। हमने प्रार्थना भवन के बीच में जाकर अपने लिए चार सीटें देखीं और जो लोग अभी आने वाले थे उनके लिए जगह छोड़ दी। गीत गाना आरम्भ हो चुका था, जब रौबदार कपड़े पहने एक जवान स्त्री अंदर आकर मेरे पास वाली सीट पर बैठ गई तो उसकी सहायता करने के उद्देश्य से मैंने गीत की अपनी किताब जिसका पन्ना पहले ही खुला हुआ था उसे दे दी और अपने लिए दूसरी किताब ले ली।

प्रभु भोज के समय वह अपने पर्स में हाथ मारने लगी। अन्त में उसने अपनी चेक बुक निकाली और चंदे की राशि लिखने लगी। फिर वचन सुनाए जाने का समय आ गया। वक्ता ने कुछ दिलचस्प बातें कहनी थीं और मैं नोट्स बना रहा था, कि मेरे पास बैठी स्त्री फिर अपने पर्स में हाथ मारने लगी। मुझे लगा कि वह कुछ लिखने के लिए ढूंढ़ रही है। मैंने फिर से उसकी सहायता करने के उद्देश्य से लिखने के लिए कागज़ दे दिया। उसने मुस्कुराते हुए सिर हिला दिया। इस बीच उसने एक छोटा सा कैलकुलेटर निकाला। लग रहा था कि वह वक्ता की बातें बड़े ध्यान से सुन रही है। जब भी वह कोई अच्छी बात कहता तो वह सहमति में सिर हिला देती, परन्तु उस समय का इस्तेमाल वह यह हिसाब लगाने में कर रही थी कि बैंक में कितना बैलेंस रह गया है।

बाद में उसने अपने नाखून भी काटे और वक्ता के बोलना बंद करने से पहले सब चीजें पर्स में समेट लीं। मेरा यह मानना बेशर्मी ही होगा कि उसने आराधना नहीं की, पर मुझे मालूम है कि उसने मुझे आराधना में प्रोत्साहित करने के लिए कुछ नहीं किया। मुझे तो लग रहा था कि वह अपना मन कहीं और, कुछ और करने के लिए दरवाज़े पर ही छोड़ आई थी।

शरीर के बजाय आत्मा पर ध्यान लगाकर

बहुत बार, तन तो वहां होता है पर मन घर में रह जाता है या भौतिक आवश्यकताओं तथा प्राथमिकताओं पर लगा रहता है। तन यह शिकायत कर सकता है कि गर्मी बहुत है या वह बहुत थका हुआ है या आराधना सेवा बहुत लम्बी होती है। तन शारीरिक भोजन की लालसा करता है जब कि आत्मा को आत्मिक भोजन चाहिए। देह, प्राण और आत्मा सबमें एकता और सहमति होनी आवश्यक है यानी तीनों आराधना की प्रक्रिया में लगे होने आवश्यक हैं।

बाइबल मनुष्य की आत्मा को कई बार ''भीतरी मनुष्य'' और शारीरिक देह को ''बाहरी मनुष्य'' कहती है। पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीही लोगों को बताया कि बाहरी मनुष्य नष्ट होता जाता है, जबकि भीतरी मनुष्य ''दिन-प्रतिदिन'' नया होता जाता है (2 कुरिन्थियों 4:16)। भीतरी मनुष्य और बाहरी मनुष्य के अन्तर को उसने रोम के लोगों को भी समझाया (रोमियों 7:22, 23)। यीशु ने अपने चेलों को बताया, ''आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है'' (मत्ती 26:41)।

यह फर्क आमतौर पर हमारी आराधना को प्रभावित करता है। परमेश्वर की उपस्थिति में

आने की भीतरी मनुष्य की इच्छा को शरीर पर काबू पाना आवश्यक है, क्योंकि सर्वशक्तिमान के दरबार में शारीरिक इच्छाओं की कोई जगह नहीं है। व्यक्ति की देह आराधना के कार्यों में लगी होती है; परन्तु मन अर्थात व्यक्ति की आत्मा ही है जो सच्ची आराधना में परमेश्वर के आत्मा से जुड़ती है। आवाज़ गाने का काम कर सकती है और प्रार्थना भी कर सकती है जबकि मन द्वेष, कड़वाहट और विद्राह से भरा हुआ है। परमेश्वर के दरबार में जाने के लिए जब तक बाहरी और भीतरी मनुष्य दोनों एकमत नहीं होते तब तक आराधना नहीं हो सकती।

शरीर को नज़दअंदाज़ करना कठिन है। हम अपनी निजी प्राथमिकताओं को ''आवश्यकताओं'' के रूप में देखते हैं। इन ''आवश्यकताओं'' को पाने पर हमारा ज़ोर दूसरों के लिए आराधना के अनुभव को खराब कर सकता है और हो सकता है जिससे हम भी आराधना के अर्थ से चूक जाएं। आराधना के लिए मन की तैयारी सभा में पहुंचने से बहुत पहले शुरू हो जानी चाहिए। इसमें केवल उसी बात में लगने का विवेकपूर्ण निर्णय है, जिससे दूसरों का सुधार हो और परमेश्वर को प्रसन्नता। यदि हमें दरवाज़े पर कुछ छोड़कर आना है तो वह संसार और हमारी वे आवश्यकताएं हैं, जो हमें लगता है कि आवश्यक हैं। हमें परमेश्वर के सामने मन से जाना आवश्यक है।

कोशिश करके

एक और अर्थ में अपनी आराधना में हम दरवाज़े के बाहर कभी नहीं जा सकते। आराधना में अपने मनों को लाने के बावजूद हमें सच्ची आराधना के द्वार में से गुज़रने के लिए बड़े प्रयास करने की आवश्यकता हो सकती है। हो सकता है कि हम ''आत्मा से प्रार्थना करें और समझ से भी प्रार्थना करें'' और ''आत्मा से गाएं और समझ से भी गाएं'' (1 कुरिन्थियों 14:15; KJV), पर फिर भी सच्ची आराधना में कभी प्रवेश न कर पाएं। गम्भीरतापूर्वक प्रार्थना करते हुए निष्ठा से अपनी आवाज़ स्तुति में उठाने के बावजूद हो सकता है कि हमें आराधना की गहराई की समझ न हो।

आराधना की गतिविधियों में भाग लेना इस बात की गारंटी नहीं है कि हमने आराधना की है। प्रार्थना और स्तुति (आमतौर पर गाना), के साथ-साथ प्रभु-भोज में भाग लेना, वचन पढ़ना, सीखना या वचन सुनना और चंदा देना ये सब आराधना की अभिव्यक्तियां हैं। आराधना के लिए परमेश्वर द्वारा ठहराई गई ये सब बातें हमें परमेश्वर की उपस्थिति में लाने के लिए बनाई गई हैं, जहां असली आराधना होती है। इनमें से कोई भी बात हमें परमेश्वर की उपस्थिति में लगा सकती है यदि हमारे मन आराधना की कला में प्रशिक्षित किए गए और पले-बढ़े हैं। दूसरी ओर आराधना की सब बातें मिलकर हो सकता है कि सच्ची आराधना में प्रवेश करने में हमारी सहायता न कर पाएं यदि हमारा मन परमेश्वर के सामने जाने को तैयार नहीं है।

स्तुति करने, वचन सुनने जाने और प्रभु-भोज का पूरा आनन्द लेने के बावजूद हो सकता है कि हम परमेश्वर के सामने कभी न आ पाएं। *यह समझ आ जाने पर कि आराधना क्या है, हमें सफ़र और मंजिल का फर्क मालूम होगा।* सफ़र में आराधना के मार्ग या ढंग दिए गए हैं। मंज़िल परमेश्वर का सिंहासन है। वहां पहुंच जाने पर हम केवल उसकी पवित्र उपस्थिति की प्रशंसा करने और उसके विशुद्ध प्रकाश की चमक में आनन्द लेने की इच्छा करते हैं। हमारे मन उमड़ते प्रेम और सराहना में उसकी ओर खिंचे आते हैं। धन्यवाद और प्रशंसा की हमारी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त शब्द नहीं हैं। यहां परमेश्वर के दरबार में हमारी आत्माएं परमेश्वर के आत्मा

से मिलकर उसके साथ सहभागिता करती हैं।

परमेश्वर ने आराधना को वह माध्यम बनाया, जिसके द्वारा हम उसके पास आ सकें और अपने जीवनों में उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उससे सामर्थ पाएं। मानवीय इतिहास में परमेश्वर का हर कार्य मनुष्य को ढूंढ़ने के लिए रहा है, जिसे उसने अपने स्वरूप पर बनाया और मनुष्य को अपने साथ मिलाना चाहता है। परमेश्वर हमारे साथ संगति रखने का इच्छुक है। सृष्टि से लेकर क्रूस तक उसने हमें छोड़ा नहीं है। लाल समुद्र के खून बने पानी से लेकर खाली कब्र तक हमारे परमेश्वर ने हम पर दावा करने और हमें अनन्त जीवन देने के लिए अपनी सामर्थ को दिखाया है। उसकी प्रतिज्ञाएं अब्राहम के बुलाए जाने से लेकर मसीह के ऊपर उठाए जाने तक युगों से सुनाई देती हैं। हमारे साथ अपनी संगति में परमेश्वर चाहता है कि हम संसार तक पहुंचने के लिए उसकी सामर्थ के माध्यम बनें, जो बड़ी मुश्किल से इस बात को स्वीकार करता है कि वह है। इस सामर्थ तक पहुंचने का एकमात्र ढंग आराधना है। आराधना के द्वारा हम अपने अन्दर उसकी आत्मिक ऊर्जा जमा करते हैं। उसकी उपस्थिति में होने के बाद वापस संसार में जाने पर हम दूसरों पर उस ऊर्जा को चमकाते हैं।

सारांश

आराधना के द्वारा परमेश्वर के साथ संगति करने वाले सभा में से यह जानकर बाहर जाएंगे कि वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने गए थे। परमेश्वर की मज़बूत करने वाली बनी रहने वाली उपस्थिति उनके अपनी दिनचर्या में लौट जाने पर उनके साथ जाती है। वे अलग लोग हैं क्योंकि परमेश्वर उनमें वास करता है (1 कुरिन्थियों 3:16; 6:19), और उनके जीवनों का केन्द्र और फोकस बना रहता है। उन्हें आत्मिक खुराक मिल गई है। वे परमेश्वर के साथ चलने और प्रतिदिन के अपने जीवनों में उसके लिए काम करने को तैयार हैं। वे वह बन गए हैं, जो परमेश्वर ने उन्हें बनाना चाहा।